अनमोल रिश्ता

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय
गुड़वा, सीतागढ़, हजारीबाग

MAY 2024

PRINCIPAL & STAFF

STUDENT EDITORIAL TEAM

STUDENT REPRESENTATIVES TILL APRIL 2024

प्राचार्य की कलम से ....

डॉ. फा. पी.जे. जेम्स

शिक्षक और प्रशासक के रूप में स्कूलों में ढाई दशक से अधिक समय बिताने के बाद, पिछले नौ महीनों से मैं इस प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय का नेतृत्व कर रहा हूँ। झारखंड के स्कूलों में शिक्षण और सीखने की स्थिति पर वर्षों का चिंतन और शिक्षक के लिए ज़रूरी विशिष्ट ज्ञान में मेरे स्वयं के शोध के आधार पर कॉलेज के कार्यप्रणाली के आलोचनात्मक विश्लेषण से यह सवाल उठता है। क्या हम उन कौशलों को विकसित करने में सक्षम हैं जो हमारे प्रशिक्षुओं को प्रभावी शिक्षक बनाएंगे? शिक्षकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण व्यावहारिक कौशल निम्नलिखित हैं:

1) **संवाद कौशल** (Communication Skills): प्राथमिक शिक्षकों के लिए स्पष्ट और प्रभावी संवाद कौशल अनिवार्य हैं। वे बच्चों को जटिल अवधारणाओं को सरल भाषा में समझाने, सहकर्मियों और अभिभावकों के साथ संवाद करने, और विद्यालय प्रशासन के साथ संपर्क में रहने में सक्षम होने चाहिए।

2) **कक्षा प्रबंधन** (Classroom Management): एक सुव्यवस्थित कक्षा अनुकूल शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देती है। शिक्षकों को कक्षा के नियमों को स्थापित करने, छात्रों के व्यवहार को प्रबंधित करने, और शिक्षण समय का प्रभावी उपयोग करने के तरीके जानने चाहिए।

3) **विविधता** (Diversity) **में शिक्षण:** शिक्षकों को विविध शैक्षिक जरूरतों वाले छात्रों के लिए अपनी शिक्षण शैली को अनुकूलित करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। वे विभिन्न सीखने की शैलियों (Learning Styles) को समझने और उनके अनुसार शिक्षण विधियों को तैयार करने में सक्षम होने चाहिए। शिक्षकों को विविधता को समझने और सभी छात्रों को समान अवसर प्रदान करने के लिए शिक्षण सामग्री और विधियों को संशोधित करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए।

4) **मूल्यांकन कौशल** (Assessment Skills): शिक्षकों को छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन करने और उनकी शिक्षण योजनाओं को समायोजित करने के लिए आवश्यक मूल्यांकन तकनीकों का ज्ञान होना चाहिए।

5) **प्रौद्योगिकी में दक्षता** (Technological Proficiency): आधुनिक शिक्षा में प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षकों को शैक्षिक सॉफ्टवेयर का उपयोग करने, ऑनलाइन संसाधनों का नेविगेशन करने, और डिजिटल नागरिकता को बढ़ावा देने में सक्षम होना चाहिए।

6) **सहयोग और टीमवर्क** (Collaboration and Teamwork): शिक्षक अक्सर अकेले काम नहीं करते हैं। उन्हें सहकर्मियों, अभिभावकों, और समुदाय के साथ सहयोग करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए।

7) **आत्म-मंथन** (Self-Reflection): प्रभावी शिक्षक अपनी शिक्षण प्रथाओं पर निरंतर चिंतन और पुनर्विचार करते हैं। उन्हें आत्म-मूल्यांकन करने और अपनी शिक्षण विधियों में सुधार करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए।

संपादक मण्डल की कलम से ..

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, गुड़वा, सीतागढ़, हजारीबाग जिला में स्थित एक शिक्षक प्रशिक्षण संस्था है जो पिछले कई दशकों से प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में सर्वांगीण तथा गुणात्मक विकास के लिए प्रयत्नशील है।

यह कॉलेज हजारीबाग जिला में येसु समाजी संस्था द्वारा संचालित एक प्रतिष्ठित कॉलेज है। इस महाविद्यालय में शिक्षा के साथ-साथ कला, संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, दर्शन, विज्ञान आदि विषयों की अभिव्यक्ति होती है। विभिन्न भाषाओं का शिक्षण तथा प्रशिक्षण यहाँ परिलक्षित है। घर में माता-पिता और विद्यालय में शिक्षक का होना अति आवश्यक है। उसी प्रकार पाठ्यक्रम को सहज, सरल और रुचिकर बनाने के लिए शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा के अलावे बहुत से ऐसे सुअवसर प्रदान किए जाते हैं जिससे हम सबका सर्वांगीण/चहूँमुखी विकास हो सके।

अनमोल रिश्ता पत्रिका इसका परिचायक है। यह महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित होता है, जो शिक्षा के विकास की भावना के साथ-साथ प्रशिक्षणार्थियों की सोच, उनकी रचनात्मक कौशल तथा सृजनात्मक शक्ति का परिचय कराता है। यह पाठकों को सृजनात्मक तथा भावात्मक सोच विकसित करने के लिए प्रेरित करता है।

संपादक मण्डल

लिबिन बखला
शंभू कुमार यादव
प्रदीप बड़ा
सुजाता कुमारी सिंह
सरोज लकड़ा

शिक्षक सलाहकार

डॉ. फा. पी. जे. जेम्स ये.स.
सिप्रियन सुरीन
डोली लकड़ा
सुशीला एक्का
गाब्रिएल किंडो

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विषय	रचनाकर
1	मेरा विद्यालय	शीला असुर
2	कॉलेज का पहला दिन	स्टेला हेम्ब्रोम
3	कॉलेज का जीवन	राजू एक्का
4	महाविद्यालय का अनुभव	बिर्जीनिया तोपनो
5	छात्रावास का अनुभव	अभिलाषा विजेता
6	मेरी बेंचमेटस	सोनाली एक्का
7	गिरना भी अच्छा है	ममता तिर्की
8	मेरे संघर्ष की कहानी	अनुज एक्का
9	जीवन अनमोल है	लिबिन बखला
10	परिवार का निर्माण	श्रीमती डोली लकड़ा
11	कृषि कार्य	अमीषा अंशु लकड़ा
12	नाटक का पहला अनुभव	आशा ज्योति हंसदा
13	सूक्ष्म शिक्षण	मनीषा टेटे
14	कॉलेज डे	अमन डुंगडुंग
15	शिक्षण अभ्यास का अनुभव	अरविन्दबेंग
16	राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020	श्री नीरज कुमार त्रिपाठी

मेरा महाविद्यालय

मेरा महाविद्यालय

मेरा महाविद्यालय, मेरा महाविद्यालय

सबसे अच्छा, सबसे प्यारा

महाविद्यालय हमारा सबसे न्यारा।

छोटी-सी, नन्ही-सी, प्यारी-सी

मैं भी हूँ एक महाविद्यालय की परी।

ब्लू रंग के ड्रेस हमारे

सबके मन को जैसे भाते

ड्रेस हमारा सबसे प्यारा

सबसे अच्छा सबसे प्यारा

बाग हमारा सबसे न्यारा

रंग बिरंगे फूल खिले हैं

चम्पा, चमेली, गुलाब आदि के ढेर लगे हैं

हमारे शिक्षक, हमारे शिक्षिका

सबसे अच्छे, सबसे प्यारे

फादर हमारे सबसे न्यारे

मेरा महाविद्यालय, मेरा महाविद्यालय

सबसे अच्छा, सबसे प्यारा

महाविद्यालय हमारा सबसे न्यारा।

शीला असुर
प्रथम वर्ष 'अ'

कॉलेज का पहला दिन

याद करती हूँ वो कॉलेज का पहला दिन

एक नई सुबह थी, एक नई खुशी

और थोड़ी-सी घबराहट भी थी

उस दिन यूनिफ़ोर्म में नहीं थी बल्कि

अच्छी तरह तैयार हुई और कॉलेज आई

अभी तक तो बस सुनी थी

कॉलेज ऐसा होता है, वैसा होता है

अब मैं उसे खुद महसूस करने लगी थी

वो हर पल मैं जी भरके जीना चाहती थी

सब कुछ बिल्कुल नया-नया सा लग रहा था

नए लोग, नया कॉलेज

वो पल याद करती हूँ

जब पहली बार क्लास में बैठी थी

एक अलग ही मुस्कुराहट थी चेहरे पे

अब मैं थोड़ी बड़ी हो चुकी थी

स्कूली जीवन छोड़ के कॉलेज जीवन में आ चुकी थी

कॉलेज जीवन जीना जो कभी सपना था

वो अब अपना हो गया था।

स्टेला हेम्ब्रोम
द्वितीय वर्ष 'अ'

कॉलेज का जीवन

राजू एक्का
प्रथम वर्ष 'अ'

मैं कई सालों से इस तरह के कॉलेज में दाखिला लेकर पढ़ाई करना चाह रहा था लेकिन मौका नहीं मिला। मैं अपनी पढ़ाई के.जी. से लेकर बी. ए. तक गवर्नमेंट स्कूल में किया जिसके कारण मुझे उतना अनुभव तो नहीं है कि लोगों से कैसे रहना है उनके साथ कैसे बर्ताव करना है। मैं जैसे ही इस कॉलेज में दाखिला लिया, यहाँ के प्रशिक्षणार्थियों और शिक्षकों के अच्छे गुणों को देखकर काफी कुछ सीख रहा हूँ। मैं इस कॉलेज में दाखिला लेकर अपने आपको भाग्यशाली मानता हूँ। इस कॉलेज के सभी लोग अच्छे हैं। सभी लोग छोटानागपुर से आते हैं और मैं संथाल परगना से आता हूँ। उस क्षेत्र में शिक्षा का उतना महत्व नहीं हैं। उस क्षेत्र में लोग पढ़ना नहीं चाहते हैं। लेकिन इस क्षेत्र के लोग काफी विकसित हुए हैं। ये सब देखकर मुझे कॉलेज में अच्छा लगता है। यहाँ पर लोग एक-दूसरे से आसानी से मिल-जुलकर रहते हैं। कॉलेज का मैनेजमेंट को देखकर अच्छा लगता है।

यहाँ येसुसमाजी द्वारा जो अध्ययन का माहौल तैयार किया है वह कबीले तारीफ है। इस तरह का माहौल हमने बचपन के दिनों में नहीं देखा। काश मुझे इस तरह का महौल बचपन के दिनों में मिला होता तो, मैं एक IAS बन जाता। पर छोड़ो वो सब बातों को, अभी जो हमारे लिए पढ़ाई का जो महौल है वह काफी अच्छा है। कॉलेज में समय-समय पर नाच, गान, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा खेल-कूद होते रहते हैं। यह सब मुझे अच्छा लगता है। Men and Women for Others जो Moto है वह मुझे अच्छा लगा। यहाँ का हर activity मुझे अच्छा लगा।

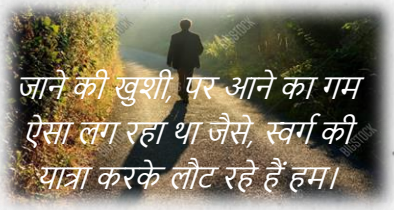

मेरी पहली यात्रा

अंजीरा टोप्पो

हमारे महाविद्यालय में जब शैक्षिक भ्रमण जाने की बात हुई तो मैं बेहद ही खुश हुई, क्योंकि यह मेरा पहला शैक्षिक भ्रमण होने वाला था। मैं पहले कभी भी समूहिक शैक्षिक भ्रमण नहीं गई थी। हम सभी ने मिलकर "गंगटोक" शैक्षिक भ्रमण जाने का निर्णय लिया।

जिस दिन हमलोग शैक्षिक भ्रमण जाने के लिए निकालने वाले थे उस दिन मैं बहुत जल्दी ही तैयार हो गई। हमलोगों को शाम 3 बजे राँची के लिए बस से निकलना था। उस दिन मुझे इतनी खुशी और उत्सुकता हो रही थी कि जल्दी समय ही नहीं बीत रहा था। ऐसा लग रहा था मानों घड़ी ने अपना मुख मोड़ लिया है और धीरे-धीरे चल रहा है। जब हमलोग राँची पहुँचकर ट्रेन से जलपाईगुड़ी जा रहे थे, उस समय का दृश्य बहुत ही अद्‌भुत था। दूर-दूर तक हरा-भरा खेत ही दिखाई दे रहा था, ऐसे प्रतीत हो रहा था मानों वे सभी खेत हमारा स्वागत कर रहे हों।

जब हम जलपाईगुड़ी से गंगटोक के लिए रवाना हुए उस समय शाम हो चली थी। गंगटोक में रात का नज़ारा बहुत ही अनोखा था, सभी ओर पहाड़ों में बत्तियाँ जल रही थी, ऐसा लग रहा था मानो कोई व्यक्ति बत्तियों की माला से उस पहाड़ को सजाया हो। जब हमलोग होटल पहुँचे और मैं अपने रूम में खिड़की के बाहर देखी तो मैं देखकर हैरान रह गई, क्योंकि रात में बाहर का दृश्य बहुत ही सुंदर था। सभी तरफ छोटी-छोटी बत्तियाँ दिखाई दे रही थी और उस समय मुझे ऐसा लग रहा था मानों मैं आसमान में हूँ और तारे मेरे नीचे टिमटिमा रहे हों। ऐसा दृश्य मैं अपने जीवन में कभी नहीं देखी थी।

सुबह जब हमलोग बर्फ की पहाड़ियों को देखने जा रहे थे तब ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे मैं स्वर्ग की ओर जा रही हूँ। सभी पहाड़ियाँ सफ़ेद ही सफ़ेद दिखाई दे रही थी, बहुत ही सुहावनी। हवा मंद-मंद बह रही थी ऐसा लग रहा था मानो समय यहीं थम जाय और मैं हमेशा यहीं रहूँ। वह पल क्या पल था? इस तरह मेरे जीवन में मेरी पहली यात्रा सबसे यादगार पल बन गया।

महाविद्यालय का अनुभव

"Life is beautiful! One day, one hour and one minute, will not come again in your entire life. Avoid fighting, being angry and speak with love."

इस महाविद्यालय मे आकर मैं अपने को बहुत सौभाग्यशाली एवं अपनापन महसूस करती हूँ, क्योंकि महाविद्यालय का अनुशासन, नियम-कानून, प्रतिदिन के क्रियाकलाप, पढ़ाई और साफ-सफाई किसी दूसरे महाविद्यालय की अपेक्षा अलग है। हमारे महविद्यालय में नियमित रूप से कक्षाएं होती हैं। यहाँ पढ़ाई के साथ-साथ वार्षिक खेल-कूद, विभिन्न प्रकार के त्योहारों, शिक्षण अभ्यास, विज्ञान प्रदर्शनी और कृषि कार्य होता है। इन सबों से मैंने अपने लिए बहुत कुछ सीखा और जानकारी प्राप्त की है। इस साल के वार्षिक खेल-कूद में मैंने एक मेडल और प्रमाण-पत्र प्राप्त करके आनंद का अनुभव किया। ऐसा लगा है मानो अपना लक्ष्य हासिल कर ली।

इस महाविद्यालय में आकार मुझे प्रार्थना मंत्री बन कर अगुवाई करने का अवसर मिला जिससे मैं अपने आप को अनुशासन में रखकर एक आदर्श विद्यार्थी बनने की कोशिश की। अगुवाई करने के दौरान आगे जाने का साहस, कुछ बोलने का मौका मिला। साथ ही अपने कर्तव्य कार्यों को ईमानदारी से करना सीखा। एक चीज़ और सीखा, वह है जब भी कुछ मौका मिलता है उसे व्यर्थ नहीं जाने देना है।

"To be most successful in life
Always forget the problems
That you faced in life.
But never forget the lessons
That those problems taught you."

बिर्जिनिया तोपनो
द्वितीय वर्ष 'अ'

छात्रावास का अनुभव

विद्यार्थी जीवन ही वह समय है, जिसमें बच्चे के चरित्र, व्यवहार तथा आचरण को जैसा चाहें वैसा रूप दिया जा सकता है। वे छात्रावास में रहते है तो वहाँ उन्हें अध्ययन के लिए सुविधायें मिलती हैं। छात्रावास का जीवन बड़ा आनंददायक है। मैं पहली बार छात्रावास में रहने आई। शुरुआत में मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। पता नहीं छात्रावास कैसा होगा, वहाँ सब से बातें हो पाएंगी या नहीं, यह सोचकर अच्छा नहीं लगता था। लेकिन वक्त के साथ धीरे-धीरे छात्रावास में बहुत अच्छा लगने लगा। यहाँ के नियम एवं अनुशासन बहुत ही अच्छे हैं, जो मेरे भावी जीवन में काम आएंगे। छात्रावास में रहकर मैं बहुत कुछ सीखी। यहाँ समय से काम करने, फूलों से लेकर बागान में काम करके बहुत कुछ जानी। यहाँ मैं रोपा रोपने के लिए सीखी जो मुझे नहीं आता था। महाविद्यालय में मुझे बहुत ही अच्छा लगता है। विज्ञान प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, अमृत महोत्सव, खेल-प्रतियोगिता, कृषि कार्य एवं पर्व को धूमधाम से मनाते हैं और मुझे सभी कार्य में कुछ-न-कुछ सीखने को मिला।

अभिलाषा विजेता
द्वितीय वर्ष 'अ'

मेरी बेंचमेटस

मेरी बेंचमेटस
है बहुत नटखट
कभी-कभी उनसे मेरी
हो जाती है खटपट।
दिमाग से तेज है
जमकर वे पढ़ती है
मौका जब मिलता है
खूब मस्ती करती है
एक दूजे की करती है
जब तब खिंचाई
अच्छे कामों के लिए
करती है बड़ाई
सफलता एक न एक दिन
चूमेगी कदम
रहेंगे साथ हम
हर कदम, हर दम

सोनाली एक्का
प्रथम वर्ष 'ब'

गिरना भी अच्छा है

गिरना भी अच्छा है
औकात का पता चलता है
बढ़ते हैं जब हाथ उठाने को
अपने का पता चलता है
जिन्हें गुस्सा आता है
वो लोग सच्चे होते हैं
मैंने झूठों को अक्सर
मुस्कुराते हुए देखा है
सीख रही हूँ मैं भी
मनुष्यों को पढ़ने का हुनर
सुना है चेहरे पे
किताबों से ज्यादा लिखा होता है।

ममता तिर्की
द्वितीय वर्ष 'अ'

मेरे संघर्ष की कहानी

ख़्वाहिशों पर पले बढ़े हैं हम,
उम्मीदों पर खड़े हैं हम
लड़खड़ाएंगे मगर
आगे बढ़ने से नहीं डरे हैं हम,
जमीन से जुड़े हैं हम

कट जाते हैं शान से,
आंधियों में नहीं उखड़े हैं हम,
बरगद की जड़े हैं हम,
जमीन से जुड़े हैं हम

मंजिल की पल्लू से बंधे हैं हम
चाहो तो कह दो, बहुत बिगड़े हैं हम,
जीत की जिद पर अड़े हैं हम
जमीन से जुड़े हैं हम

अपनी गलतियों पर हँसते हैं हम
किसी और की गलतियों पर
ताने नहीं कसते हैं हम
हजारों के दिलों में बसते हैं हम,
चंद मुश्किलों में नहीं उजड़े हैं हम
जमीन से जुड़े हैं हम

झूठ से डरते हैं हम,
सच की उंगली पकड़े हैं हम,
दिल के बहुत बड़े हैं हम,
जमीन से जुड़े हैं हम

अनुज एक्का
प्रथम वर्ष 'अ'

जीवन अनमोल है

किसी गाँव में एक प्रसिद्ध नशेड़ी रहता था। वह दिन-रात नशे में डूबा रहता था। वह अपने आप को इस तरह बना लिया था कि बिना नशा का जीवन असंभव हो चुका था। वह अपना अस्तित्व ही भूल चुका था। उसकी इस हरकत को देखकर लोग उसे पागल तो नशेड़ी और ना जाने क्या-क्या कहकर पुकारते थे। परन्तु उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था। वह "कुत्ता भूके हज़ार हाथी चले बाज़ार" वाला काम करता था। वह किसी की नहीं सुनता था। एक बार ऐसा हुआ कि उसने आत्महत्या करने कि कोशिश की। सौभाग्यवश वह बच गया। उसकी इस करतूत से घरवाले बहुत परेशान हो गए थे। उन्होंने उसे समझाया, "बेटा जीवन बड़ा अनमोल है" इसे ऐसे ही व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। यह जीवन हमे विरासत में मिली है। हमारा जो जीवन है यह अपने लिए नहीं वरन दूसरों की सेवा करने और अच्छा काम के लिए है।"

घरवालों की यह बात हमेशा उसके कानों में गूंजने लगा। उसने अपने जीवन के बारे में काफी गहराई से सोचा और यह प्रण लिया कि वह आज से और अभी से नशा को हाथ नहीं लगाएगा।

प्रिये दोस्तो, कहीं हम भी तो उस व्यक्ति कि भांति नशे में नहीं डूबे हुए हैं? आज हमें अपने आपको परखने की आवश्यकता है। आज जब हम आँखें ऊपर उठाकर देखते हैं तो हमें पता चलता है कि पूरी दुनिया भोग-विलास रूपी नशे में डूबी हुई है। विशेष करके हम युवा वर्ग।

आज हम भी उस व्यक्ति की तरह अनेक प्रकार के नशे से ग्रसित हैं। आज हम सभी मोबाइल के नशे में डूब गए हैं। आज बहुत से युवा मोह-माया के नशे में डूबे हुए हैं। मैंने बहुत से ऐसे युवाओं को देखा है जो अपना धन दुनिया कि रंग-रलियों में उड़ाते है। आज बहुत से लोगों को पैसा कमाने की लत लग गई है। आज बहुत से लोग दिखावा की ज़िंदगी जीते हैं, वे दुनियादारी के नशे में भोग-विलास में डूब चुके हैं। आज हम सभी दुनिया की ऐसी नशा में डूबे हैं कि हमें पता ही नहीं चलता हमारे पड़ोस में क्या हो रहा है, कौन आ रहा है, कौन जा रहा है? हमे कुछ खबर नहीं। हम अपने आपको सीमित कर दिये हैं।

अतः आज हमें उन सभी सांसारिक मोह-माया की जिंदगी छोड़कर नई जिंदगी जीने की आवश्यकता है। आज हमें उस व्यक्ति की तरह अपने जीवन के बारे में, समाज के बारे में जानने और अपने जीवन स्तर को, अपने जीवन शैली को बदलने और एक नया मोड़ देने की आवश्यकता है। क्योंकि हमारा "जीवन अनमोल है।"

लिबिन बखला
प्रथम वर्ष "अ"

परिवार का निर्माण
घर के संदर्भ में

श्रीमती डोली लकड़ा

परिवार मे परी (दूत) है तो वार भी है, जिसे हमें सामना करना है। सकारात्मक और नकारात्मक दोनों चीजों को स्वीकारना है। परिवार का लक्ष्य सिर्फ जरूरतें पूरी करनी नहीं पर लक्ष्य हासिल करने का साहस देना भी है।

परिवार निर्माण की मुख्य बातें:

1. **घर की नींव :** घर की नींव अर्थात आपका अपना विश्वास, जो आपके अपने धर्म, जाति, रीति-रिवाज से जोड़े रखता है। क्योंकि सांसरिक जीवन में दुख, कठिनाई, निर्धनता, बीमारी, आलोचनाओं की आँधी निरंतर चलती रहती है, जिसमें स्थिर बने रहने के लिए आपको मजबूत बनना है।
2. **दीवार की मजबूती के लिए लेप :** घर निर्माण में ईंट और पत्थर को जोड़ने के लिए तथा मजबूती प्रदान करने के लिए सीमेंट की आवश्यकता होती है। उसी तरह परिवार के दीवारों की मजबूती के लिए जरूरी है- प्रेम। जो व्यक्ति को बढ़ाता, संभालता, संवारता तथा टूटने से बचाता है। परिवार में सदस्यों की संख्या से ज्यादा उनके बीच आपसी प्रेम का स्थान महत्वपूर्ण है।
3. **छत की आवश्यकता :** छत का कार्य हमें ओलाबृष्टि, धूप, वर्षा से सुरक्षा देना है ताकि हमें क्षति न हो। ठीक उसी प्रकार ईश्वर का वचन प्रत्येक के लिए एक टिकाऊ छत है। जो हमें दुख, पीड़ा, विरोध आदि प्रहारों से बचाता है।
4. **घर की सुंदरता के लिए रंग-रोगन :** हम अपने घरों को आकर्षक रंगों, पर्दों, कालीनों से सुशोभित करते हैं। परिवार की शोभा बढ़ाने के लिए हमें आनंद, मेल, धीरज, क्षमा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम जैसे रंग-रोगन का इस्तेमाल करना है। एक परिवार तभी स्थिर और संयमित हो सकता है जब सभी सदस्य इन रंगों से रंगे हों।
5. **दरवाजे की आवश्यकता :**
   दरवाजे सीमाओं को दरसाते हैं :
   - पति-पत्नी के सम्बन्धों की सीमा
   - बच्चों तथा माता-पिता के सम्बन्धों की सीमा
   - पड़ोसियों से सम्बन्धों की सीमा

ईश्वर का वचन प्रत्येक के लिए एक टिकाऊ छत है। जो हमें दुख, पीड़ा, विरोध आदि प्रहारों से बचाता है।

ये दरवाजे हमें एक-दूसरे के प्रति वफादारी करना सिखाते हैं। अतः मानवीय विकास के लिए ऐसे परिवार का निर्माण होना है जिसमें -

- ❖ नींव ईश्वर हो।
- ❖ दीवारों पर प्रेम तथा क्षमा की मजबूत परत हो।
- ❖ छत सुवचनों पर निर्भर हो।
- ❖ घर की सुंदरता को बढ़ाने में विचारों, कार्यों का रंग-रोगन हो।
- ❖ दरवाजे एक-दूसरे के वफादारी का प्रतीक हो।

कृषि कार्य

कुदाली से करते अपने चारों तरफ साफ-सफाई
हँसुआ से करते अपने भूमि कि सफाई
"इसीलिए तो कहते कुदाली और हँसुआ हमारी धरती कि सान"

जब मैं कुदाली और हँसुआ पकड़ी तो मुझे समझ में नहीं आया कि मैं कैसे पकड़ूँ और किस तरह इससे काम करना है। क्योंकि यह मेरा पहला कार्य था। जब मैं पहली बार हँसुआ चलायी तो बहुत डर लग रहा था। डर के कारण अपना हाथ कट गया। मैं बहुत रोई तो एक मिस ने कहा "मत डरो, तुम कर सकती हो।" फिर मैं हँसुआ पकड़ी और चलाने का अभ्यास की क्योंकि हर दिन हँसुआ से ही काम करना था। अब मैंने पूरी तरह से हँसुआ चलाने सीख गयी।

जब मैंने कुदाली पकड़ी, तो वह मुझे बहुत भारी लगा। देखने में तो लगता था कि हल्का होगा, क्योंकि किसी को भी कुदाली चलाते देखते थे तो लगता था कि वह चला रहा है। इसलिए कहते हैं ना ऊपर मत देखो उसकी गहराई में जाओ तो पता चलेगा कि वह कैसा है? पहली बार में ही अपने पैर काट दी। बहुत दर्द हुआ। मुझे सिस्टर आकर डांटी कि कैसे काम करती है। मुझे फिर से रोना आ गया। पर मिस आकर प्यार से समझाई कि मत रोओ, यह तो छोटी चोट है। आगे जाकर बहुत चोटें मिलेंगी। बड़ा या छोटा तुम्हें तो सहना पड़ेगा। इसीलिए सीखो, डर के भागो मत। अभी तो मैं कुदाली भी चलाने सीख गई। अब तो मैं घर में भी चाचाजी और दादी की मदद कर सकती हूँ। मुझे ऐसा सीख मिला कि मैं अपने दैनिक जीवन में भी इसका उपयोग कर सकती हूँ।

मुस्कुराने की कोशिश हमेशा रखो क्योंकि इसी के कारण ही सब डर दूर हो जाता है।

अमीषा अंशु लकड़ा
द्वितीय वर्ष 'अ'

नाटक का पहला अनुभव

नाटक में भाग लेने का यह मेरा पहला अनुभव रहा है। नाटक में मेरा एक बच्ची का रोल था, पर शायद मुझे इस नाटक में भाग लेने का मौका न मिलता, अगर मैं लंबी होती। अतः यह ठीक ही कहा गया है, जो होता है ठीक होता है। मैं छोटी सी भी हूँ और बच्ची जैसे भी दिखती हूँ। पर दिखने से स्वभाव तो नहीं बदलता है। मैं अब बड़ी हो गयी हूँ जिसके कारण बच्ची का रोल करने में मुझे काफी कठिनाई हुई।

नाटक का अभ्यास करते, सीखते-सीखते मुझे बच्ची का रोल भी अच्छे से करने आ गया था। आखिरकार वो दिन आ ही गया जिस दिन हमें स्टेज में नाटक प्रस्तुत करना था। वो हमारा बहुत ही खास दिन था महाविद्यालय दिवस। इस दिन खुशी के साथ डर का भी अनुभव हो रहा था, पर इसे तो प्रस्तुत करना ही था और हमने प्रस्तुत किया। तब तो मुझे डर नहीं लगा और हमलोगों का नाटक सफल रहा। नाटक के बाद सब बोल रहे थे मैं ड्रेसप के कारण पूर्ण रूप से बच्ची लग रही थी। इसलिए उस दिन की याद मुझे अभी भी आती है। और अच्छे अनुभव के साथ यादगार बन गया है।

आशा ज्योति हंसदा
प्रथम वर्ष "अ"

सूक्षण-शिक्षण

सूक्षम-शिक्षण का यह मेरा पहला अनभव था। मैंने अपने विषय की तैयारी अच्छे से कर ली थी। लेकिन मन में बहुत सवाल उठ रहे थे। साथ-ही-साथ घबराहट और झिझक भी थी कि मैं अपने विषय को किस तरह से सभों के सामने प्रस्तुत करूंगी। सूक्षम-शिक्षण के दौरान मैं महाविद्यालय से छात्रावास जाने के बाद भी पाठ की तैयारी किया करती थी, जो भी समालोचना मिलती थी उसे मेरे सहचर भाई-बहनों की मदद लेते हुए उसे कम करने की कोशिश करती थी और बेहत्तर करने का प्रयास करती थी। यही कोशिश ऐसा रंग लाया कि मैं दूसरे दिन मेरे विषय को बहुत अच्छा से प्रस्तुत कर पायी और इसी कारण मुझे सराहना देते हुए सभों ने मेरे लिए ताली बजाई। इस ताली ने मुझे आंतरिक खुशी के साथ-ही-साथ जीवन में और भी अच्छा करने के लिए प्रेरित किया। यह अनुभव मेरे लिए बहुत ही अच्छा था।

मनीषा टेटे
प्रथम वर्ष 'ब'

College Day

The name of my college is Primary Teachers' Education College, Gurwa, Sitagarha, Hazaribag. On 19th of March, we celebrated our college day the feast day of Saint Joseph, the patron saint of our college.

The day began with a Holy Mass. The main celebrant and the chief guest of the day was Fr. Satya Prakash Baskey. I was deeply impressed by his Gospel message and was inspired to be an honest man like Saint Joseph. We sang very beautiful songs in the Mass. After the Mass was over, our cultural programme started after a break of half an hour.

Like every year, this year also we celebrated college day, but this year I had a different feeling because this year I was not sitting as an audience. This year I was the captain of my college and I anchored the college day with my three other college captains.

At first I was very scared whether I would be able to conduct this programme or not but my friends encouraged me and I did anchoring. Initially, I felt a little scared but after a while that fear vanished and I enjoyed anchoring.

Now, I am going to become a teacher, so, I need to come forward and speak. I learnt a lot today about how to present myself in front of the audience and how to energize the audience. Whatever, I learned today, I will adopt it in my life and will always be ready to encourage children to come forward and try to speak.

I'll always remember 19th March 2024, what I did and learnt that day.

अमन डुंगडुंग
द्वितीय वर्ष 'ब'

नव प्राथमिक विद्यालय, बिरहोरटोला, डेमोटांड़ में एक महीने का शिक्षण अभ्यास का अनुभव

जैसे कि हम जानते हैं कि शिक्षण अभ्यास शिक्षक प्रशिक्षण का एक सबसे महत्वपूर्ण भाग होता है। अतः हर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय अपने प्रशिक्षुओं को विभिन्न विद्यालयों में शिक्षण अभ्यास का अवसर प्रदान करता है।

इस वर्ष शिक्षण अभ्यास का समय एवं स्कूल JCERT द्वारा निर्धारित किया गया था। उस निर्धारित समय के अनुसार हमें चार महीने का शिक्षण अभ्यास करना था जो काफी लंबा समय था। इससे महाविद्यालय के समय-सारिणी एवं क्रियाकलाप प्रभावित होते, इसलिए हमारी परेशानियों को कम करने के लिए हमारे प्राचार्य के अथक प्रयास द्वारा हमें केवल एक महीने का शिक्षण अभ्यास करना पड़ा। इसके लिए मैं फा. प्राचार्य को तहे दिल से धन्यवाद देना चाहता हूँ।

अब रही बात शिक्षण अभ्यास अनुभव की, मुझे और मेरे साथ दो प्रथम वर्ष के प्रशिक्षु सर अंकित कुल्लू और सर अभिषेक एक्का को शिक्षण अभ्यास के लिए नव प्राथमिक विद्यालय, बिरहोरटोला, डेमोटांड़ मिला था। हमने आने-जाने के लिए अन्य तीन स्कूलों में जाने वाले प्रशिक्षुओं के साथ एक ऑटो रिजर्व किया था। हम लोगों की संख्या 13 थी और आने-जाने के लिए प्रत्येक दिन का किराया 60 रूपया था।

प्रथम दिन जाने के दौरान काफी उत्साहित था और मन-ही-मन सोच रहा था कि ऐसा पढ़ाएंगे, वैसा पढ़ाएंगे। लेकिन जब मैं स्कूल पहुँचा, तो हमारे होश उड़ गए, क्योंकि जिस तरह के स्कूल की परिकल्पना मैं कर रहा था यह उससे बिल्कुल भिन्न निकला। मुश्किल से 15 बच्चे थे। वो भी बिना यूनिफ़ोर्म के। सभी बच्चे फटे-पुराने और गंदे कपड़े में थे। ऐसा लग रहा था जैसे ये कभी नहाते नहीं हैं, क्योंकि इनके बदन से बदबू आ रही थी। यह नज़ारा हमारे उत्साह को खत्म कर देने वाला था। हम कोसने लगे थे –'कहाँ फंस गए यार' । तभी यहाँ के अध्यापक सर देवनारायण ने बताया कि यह विद्यालय अन्य विद्यालयों से भिन्न है, यहाँ का महौल ही अलग है। यहाँ के बच्चे खुद से विद्यालय नहीं आते, बल्कि उन्हें उनके घर जाकर विद्यालय लाना पड़ता है। यह सुनकर हमें यह साफ हो गया कि शिक्षण अभ्यास का कार्य उतना आसान नहीं होने वाला है।

हमलोग प्रतिदिन 9 बजे तक विद्यालय पहुँच जाते थे और बच्चों को उनके घर जाकर उन्हें स्कूल लाते और असेम्बली कराते । उन्हें एक ही कक्षा में पढ़ाते थे। उन्हें अकेले पढ़ाना संभव नहीं होता था क्योंकि बच्चे पिछले दरवाजे से भाग जाते थे। इसलिए हमेशा हमलोग कक्षा में दो जन होते थे। एक पढ़ाता था, तो दूसरा बच्चों को संभालता था।

प्रथम सप्ताह जरूर कठिनाईयों से भरा रहा, लेकिन बाद में धीरे-धीरे सभी चीजें अच्छा लगने लगा। अब बच्चे प्रशिक्षु शिक्षक को जानने लगे थे। हम भी उनसे भावनात्मक रूप से जुड़ गए थे। अब उन्हें पढ़ाने में रुचि लगने लगा था। अतः उन्हें हम खेल एवं एक्शन सॉन्ग के माध्यम से मस्ती कराते हुए सिखाने का प्रयास किया। वे भी धीरे-धीरे सीखने में रुचि दिखाने लगे।

नव प्राथमिक विद्यालय, बिरहोरटोला में शिक्षण अभ्यास का अवसर पाकर अब हमें गौरवन्वित महसूस हो रहा था, क्योंकि हमें न केवल कक्षा में पढ़ाने का मौका मिला बल्कि बच्चों को उनके घर जाकर उन्हें स्कूल आने के लिए प्रेरित करने का भी अवसर मिला। अतः कुल मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि इस वर्ष का शिक्षण अभ्यास एक नई सीख देने वाला है।

अरविन्द बेंग
द्वितीय वर्ष 'अ'

NEP-2020 के तहत भारत में भाषाई विविधता को बढ़ावा एवं संरक्षण

श्री नीरज कुमार त्रिपाठी

34 वर्षों के लंबे समय के बाद NEP-2020 शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव लाया गया है। भारत जैसे विशाल देश में स्थानीयता के साथ-साथ भाषाई विविधता है। इस भाषाई विविधता को बढ़ावा देना एवं उसका संरक्षण करना अति आवश्यक है। विद्यालय ही है जो भाषाई विविधता के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। भारत एक बहुभाषावाद वाला देश है। सभी भारतीय भाषाओं, क्षेत्रीय भाषाओं, मातृभाषाओं को बढ़ावा देना आवश्यक है ताकि विभिन्न भाषाओं का संरक्षण एवं बढ़ावा मिल सके।

भारत के विभिन्न भाषाओं, क्षेत्रीय भाषाओं एवं मातृभाषाओं को बढ़ावा एवं संरक्षण निम्न रूप से एकीकृत किया जा सकता है:

1. विद्यालय में त्रिभाषा फोर्मूले को रखना तथा द्विभाषा और त्रिभाषा प्रारूप में शिक्षण-अधिगम किया जाय।
2. शिक्षकों के कौशल विकास और उसके भागीदारी के परिणाम को बढ़ावा दिया जाय।
3. भाषाई विविधता को बढ़ावा एवं संरक्षण हेतु आधुनिक तकनीक का उपयोग किया जाना चाहिए।
4. भाषाई विविधता के आधार पर TLM सामग्री तैयार करना एवं Online Models के द्वारा विभिन्न स्तरों में भाषा पाठ्यक्रम का निर्माण करना चाहिए।
5. भाषाई विविधता को बढ़ावा और संरक्षण हेतु अनुवाद की भागीदारी एवं आधुनिक तकनीक का उपयोग भाषा को सीखना आसान और रोचक बनाता है।
6. छात्रों के लिए भाषाई सामग्री बैंक का विकास एवं समन्वय करना एक महत्वपूर्ण कदम होगा।
7. बुनियादी-व्याकरण, क्षेत्रीय भाषाओं के पाठ्यक्रम तैयार करना।
8. भारत एक बहुभाषीयदेश है। इसकी कार्यप्रणाली एवं संरचनात्मक प्रणाली दोनों भाषाओं पर आधारित हो।
9. एक बहुभाषीय Language Lab की स्थापना किया जाना चाहिए।
10. भारत के विभिन्न क्षेत्रों में क्षेत्रीय भाषा पर विशेष ज़ोर दिया जाना चाहिए।
11. "बहुभाषावाद कभी नहीं था बोझ" इस स्लोगन को बढ़ावा दिया जाय।
12. भारतीय भाषाओं के प्रचार के चार पहलू - (a) जीविका (b) संरक्षण (c) भाषा जोड़ने पर बल (d) प्रतिष्ठित भाषाविदों का विकास, पर बल दिया जाना चाहिए।

अतः NEP-2020 के तहत भाषाई विविधता को बढ़ावा और उसका संरक्षण को बल दिया जा रहा है।

COLLEGE ACTIVITIES- 2024